रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2021–23

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215, 9415074806, 9415486103

वर्ष – 45 • अंक – 23 • कानपुर 1 से 15 दिसम्बर 2023 • प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी • वार्षिक मूल्य ₹ 100

आज की आवश्यकता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में

Communicable Diseases पर उपयोगिता सिद्ध करने की

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कीर्ति को यदि अक्षुण रखना है तो हमें कार्य को प्रमुखता देनी चाहिये, इतिहास यह बताता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जन्म बीमारियों के समूल नाश के लिए किया गया था, डा0 मैटी ने उस समय देखा कि जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां थीं उनसे रोग का समूल नाश नहीं होता था बल्कि लक्षण कुछ समय के लिए दब जाते थे जोकि विपरीत परिस्थितियों के आने पर पुनःजीवित होकर शरीर को रोगग्रस्त कर देते थे, डा0 मैटी के अनुसार शरीर का रोगग्रस्त होना रस और रक्त के असंतुलन से होता है, जब यह दोनों संतुलित अवस्था में होते हैं तो शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है, रोगों का जन्म परिस्थिति जन्य होने के साथ बहुत कुछ मनुष्य के आहार विहार पर भी निर्भर करता है, जब आहार विहार में खराबी आती है तो ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं जो कि शरीर को रोगग्रस्त होने का संकेत देते हैं, डा0 मैटी का मानना था कि एक रोग में कई लक्षण एक साथ प्रकट होते हैं इसलिए हर लक्षण के आधार पर औषधि का चयन कर रुग्ण शरीर का इलाज करना होता है अर्थात संयुक्त लक्षणों वाले रोग के लिए संयुक्त औषधि की आवश्यकता होती है, तत्समय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का जर्मनी और इटली में बोल–बाला था इसलिए मैटी के इस विचार को वहां के चिकित्सकों ने हास्यस्पद बताया, यह तो कालान्तर में उनके विचार को होम्योपैथी ने स्वीकारा, आज की जो होम्योपैथी है उसमें कहीं न कहीं मैटी के विचारों का समावेश दिखायी देता है, होम्योपैथी को देश में मान्यता मिल चुकी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता के लिए संघर्षरत है मान्यता वह विषय है जिसपर सरकार को निर्णय लेना है, निर्णय लेने के लिए सरकार के पास बहुत सारे पहलू व मापदण्ड हैं, हमें उन मापदण्डों और पहलुओं को पार करना है, तभी जाकर हम सरकार की कसौटी पर खरे उतरेंगे जो मापदण्ड बनायें जाते हैं वह कार्यों के मूल्यांकन और उसकी योग्यता के निर्धारण के लिए होते हैं, जब होम्योपैथी को मान्यता मिली थी उस समय परिस्थितियां दूसरी थीं चिकित्सा शिक्षा का इतना विकास नहीं था, इतना वैज्ञानिक विश्लेषण भी नहीं होता था, यदि हम होम्योपैथी की मान्यता पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट नज़र आयेगा कि कार्य के आधार पर ही होम्योपैथी को सरकार द्वारा मान्यता दी गयी थी, यदि हम थोड़ा पीछे दृष्टि डालें तो हमें दिखायी पड़ेगा कि उस समय भी होम्योपैथी में बहुत काम हुआ था सर्वाधिक धर्मार्थ व दातव्य चिकित्सालय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के ही दिखायी पड़ते थे।

- ✓ गम्भीर रोगों को ठीक करने में है महारत
- ✓ योग्यता और अनुभव का पूरा प्रयोग हो
- ✓ अधिकार और कर्तव्यों में कर्तव्य को प्रमुखतः
- ✓ कैंसर ठीक करने के दावे को सिद्ध करें
- ✓ श्वांस रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी गुणकारी
- ✓ शरीर के अनुकूल हैं इस पद्धति की औषधियां
- ✓ दावों को सिद्ध करने का उचित समय
- ✓ पूर्वांचल के इलेक्ट्रो होम्योपैथ डेंगू और चिकनगुनियां पर स्थापित करें अपनी दक्षता

इन्हीं चिकित्सालयों

शेष पेज 2 पर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वास्तविक सम्मान दिलाना हमारी प्राथमिकता–डा0 इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए आवश्यक है कि इसका स्थापित चिकित्सा पद्धति के रुप में वास्तविक विकास किया जाये और विकास का स्वरूप कुछ इस तरह का हो जिसका लाभ आमजन भी उठा सके तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थायित्व दिया जा सकता है, यह बात बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने डा0 नन्द लाल सिन्हा की जयन्ती प्रेरणा दिवस के अवसर पर कही।

डा0 इदरीसी ने कहा कि वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी चल रहा है वह कुछ सामान्य सा नहीं है, केवल उत्तर प्रदेश की बात न करके यदि हम सम्पूर्ण भारत पर एक दृष्टि डालें तो एक बात एकदम स्पष्ट रूप से नज़र आती है कि विकास का जो बहाव वास्तविक होना चाहिये वह नहीं हो रहा है, लोग अपना हित साधने में लगे हैं, जो गुम हो गये थे वह भी मान्यता लेने के नाम पर लाइन में खड़े दिख रहे हैं, यह हम सब के लिये सोचने का विषय है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यदि समाज में प्रभावी ढंग से स्थापित करना है तो यह आवश्यक है कि इस चिकित्सा

Dr. N.L.Sinha
30 Nov. 1889 - 30Aug.1979

पद्धति का विकास भारत सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देश के अनुसार किया जाये जो भारत सरकार द्वारा दिनांक 25 नवम्बर, 2003 को जारी किया जा चुका है, इसका लाभ सर्वसमाज को मिले।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु गठित अन्तर विभागीय समिति का मत है कि पद्धति का लाभ कुछएक रोग तक सीमित न रहकर व्यापक रुप से हर रोग पर हो, जबकि प्रयोजलकर्ता बात केवल कैन्सर को ही प्राथमिकता देते नज़र आ रहे हैं, जबकि वास्तविकता तो यह है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति को स्थापित चिकित्सा पद्धति की मान्यता तभी सम्भव है जब उसका उपयोग प्राथमिक उपचार के साथ–साथ सामुदायिक स्तर पर भी व्यापक स्तर पर किया जाये, अच्छा हो कि जनरल हॉस्पिटल/क्लीनिक खोलकर प्रत्येक रोग का इलाज किया जाये और असाध्य रोगों का भी वार्ड पृथक रुप से खोल कर इलाज हो, इससे उद्देश्य भी पूर्ण होगा और आपके पास अनेक मरीज़ों के डेटा भी सुरक्षित हो जायेगा जो आपको I.C.M.R. को आंकड़े दिखाने में भी सहायक सिद्ध होंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दवा से आपके द्वारा किन–किन रोगों का इलाज सफलता पूर्वक किया गया है, आपसे जो बार–बार प्रश्न पूछा जाता है कि

शेष पेज 3 पर

कसौटी पर खरा उतरना होगा

हर व्यक्ति का सपना होता है कि वह जिस व्यवसाय से जुड़ा हो वह सम्मानित हो तथा समाज में हर व्यक्ति द्वारा स्वीकारणी हो यदि ऐसा होता है तो उस व्यक्ति का उस व्यवसाय में कार्य करने में मन लगता है तथा अपनी पूरी तन्यमयता के साथ अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में तत्पर रहता है, जहां पर व्यवसाय में कोई परेशानी आती है वह उसको भी दूर करने का प्रयास करता है और प्रयास इस स्तर तक करता है कि उसे सफलता मिले।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी व्यवसाय से जुड़े हर व्यक्ति का यह सपना है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास हो और इस चिकित्सा पद्धति को वही सम्मान मिले जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों को प्राप्त है, चूकि समाज में ज़िन्दा रहने के लिए व अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक होता है कि उसके व्यवसाय की विश्वसनीयता बनी रहे, विश्वसनीयता का महत्व इसलिए है क्योंकि जब विश्वास रहता है तो व्यक्ति के काम में रूचि और सक्रियता दोनों बनी रहती है जब रूचि और सक्रियता होगी तब कार्य का विकास होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में आज इन दोनों चीज़ों के दर्शन नहीं हो रहे हैं, लोग कार्य तो कर रहे हैं लेकिन पूरी रूचि के साथ नहीं करते इसलिए पूर्ण सक्रियता दिखायी नहीं पड़ती है, जब हम इस बिन्दु पर गम्भीरता से चिन्तन करते हैं तो एक बात स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है कि वर्ष 2003 में जो घटनाक्रम घटा और उसके जो परिणाम सामने आये उसने न केवल चिकित्सकों अपितु जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था संचालक थे उनकी मनोदशा में मूलभूत परिवर्तन ला दिया है इसी परिवर्तन का परिणाम है कि उत्साह की कमी और निरन्तरता के प्रति असाधारण भाव का जन्म लेना, इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे–धीरे जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति समर्पित थे उनके मन में अविश्वास ने जन्म ले लिया और कार्य के प्रति एक नयी संकीर्ण मानसिकता ने जन्म और यहीं से प्रारम्भ हुआ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक नया अध्याय इस अध्याय ने नई–नई परिस्थितियों को जन्म दिया, कहीं ऊर्जा का प्रवाह हुआ तो कहीं मानसिक स्तर में परिवर्तन आया।

वर्ष 2004 से 2011 तक जिन विपरीत परिस्थितियों में हम सबने संघर्ष किया वह अपने होने के निशान छोड़ गया है 21 जून, 2011 आते–आते बहुत कुछ बदल चुका था।

कुछ साथी निराश होकर छोड़कर चले गये, कुछ जाने के चक्कर में रहे और जो बचे वह भी अन्तरद्वन्द से उबर नहीं पा रहे थे चूँकि जो प्रयास किये जा रहे थे वह उतने सटीक नहीं थे जितने की होने चाहिये स्थितियों ने करवट क्या बदली सब कुछ बदल गया अगर बदला नहीं तो वह है हमारी नियति।

आज एक बार फिर स्थिति वहीं पर आकर खड़ी हो गयी है यदि समय रहते हुए इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो कल कुछ भी हो सकता है ! आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी लोग लगे हैं उनकी यही इच्छा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिले मान्यता के लिए प्रयास भी किये जा रहे हैं परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं आ रहे हैं ! जब प्रयासों के बाद परिणाम नही मिलता है तो मन यह सोचने पर विवश हो जाता है कि आखिर वह कौन सी परिस्थितियां हैं जो अपेक्षित परिणाम नहीं लेने दे रही हैं ? यद्यपि यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने में कोई बाधा नहीं है लेकिन वैधानिक रूप से कार्य करने के लिए जो राजकीय सहयोग और समर्थन की आवश्यकता है वह उत्तर प्रदेश राज्य को छोड़कर अन्य किसी राज्य में दिखायी नहीं पड़ती है उत्तर प्रदेश सरकार ने 4 जनवरी, 2012 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए शासनादेश जारी कर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान हेतु अपनी सहमति दे दी है।

कोई भी कार्य मात्र कल्पना से पूर्ण नहीं होता यदि कल्पना को आकार देना है तो हमें ऐसे कार्य संस्कृति को जन्म देना होगा जो एक नई व्यवस्था को जन्म दे, सरकार से मांगना हमारा अधिकार है, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिये कि अधिकार पाने के लिए अपनी योग्यता सिद्ध करनी होती है और जो कसौटियां बनायी गयीं हैं उनपर हमें खरा उतरना भी होगा यदि समय की मांग के अनुरूप हम परिणाम नहीं दे पाये तो हमारी चुनौतियां व्यर्थ हो जायेंगी।

परिस्थितियां पल–पल बदलती हैं सरकार में बैठे अधिकारी की सोच भी बदलती है कभी–कभी तो ऐसा भी होता है जो अधिकारी आज आपके साथ है कल उसकी कलम आपके विरोध में भी हो सकती है यह विरोध आपसे किसी तरह की नराज़गी के कारण नहीं होता है अपितु परिस्थितजन्य होता है।

आजकी आवश्यकता है .....प्रथम पेज से आगे

का परिणाम था कि गरीब जन से लेकर मध्यम व मध्यवर्गीय तक होम्योपैथी की पहुँच हो गयी, पहले लोगों ने कहा कि छोटी–छोटी व मीठी–मीठी गोलियां शरीर पर क्या प्रभाव डालेंगी ? लेकिन जब इनका प्रभाव सकारात्मक दिखा तब समाज में यह सन्देश गया कि यह चिकित्सा पद्धति लाभकारी है, समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से जुड़ गया इसका परिणाम यह हुआ कि जो अपने आप को सम्भ्रान्त घनाढ्य व अभिजात्य मानते थे उन्होंने भी होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारा, धीरे– धीरे होम्योपैथी जनरूचि में शामिल हो गयी, यही व्यवस्था यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रारम्भ कर दी जाये तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस चिकित्सा पद्धति का विकास न हो पाये, जिस विकास की राह में हम सब पंक्तिबद्ध होकर खड़े हैं उन्हें परिणाम मिलने लगेंगे, काम करने के लिए जो वातावरण होना चाहिये वह हमें उपलब्ध है, मात्र हमें अपनी मनोदशा में परिवर्तन लाना है, कार्य के प्रति भाव उत्पन्न करने हैं, परिणामों की चिन्ता किये बगैर हम सबको अपनी पूरी क्षमताओं का प्रयोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्य क्षेत्र में लगाना चाहिये, बीमारियां तो बहुत सारी हैं हर एक पर विजय पाना सम्भव नहीं है परन्तु कुछ ऐसी असाध्य बीमारियां हैं जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों के लिए भले ही असाध्य हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इन बीमारियों की भी सफल चिकित्सा उपलब्ध है, एक सर्वे के अनुसार भारत में लगभग 8 प्रतिशत से अधिक लोग विभिन्न तरह के कैंसर से पूरी तरह पीड़ित हैं और जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं उनके चिकित्सक इस गम्भीर बीमारी के उपचार के नाम पर आर्थिक शोषण भी करते हैं, सिकायी और कीमोथेरेपी के नाम पर मंहगी– मंहगी दवाईयां रोगियों को लिखी जाती हैं और विवश हो कर रोगी व उनके परिजन कष्ट दूर होने की आशा में सब कुछ सहन करते हैं, कैंसर में रोगी को जिस भंयकर पीड़ा का अनुभव होता है उसका वर्णन करना आसान नहीं है मात्र रोगी ही नहीं उसके परिजन भी उसकी इस पीड़ा को सह नहीं पाते हैं परिणामतः जो जहां जानकारी पाता है लाभ के लिए वहां पहुँच जाता है, इतिहास इस बात का साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इस गम्भीर और असाध्य बीमारी के लिए औषधियां उपलब्ध हैं बस आवश्यकता है तो सिर्फ इनके सही उपयोग की, जैसा कि हम सब लोगों को बताया गया है कि ..

यदि कैंसर अभिशाप है !
तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी वरदान !!

हमें आज भी याद है कि सन् 1990 में दिल्ली के प्रगति मैदान में वर्ल्ड हेल्थ ट्रेड फेयर में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक स्टाल इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के द्वारा लगाया गया था, ज्ञातव्य हो कि यह वही एसोएिशन है जिसे **EHMAI** के नाम से भी जाना जाता है एवं इलेक्ट्रो होम्यापैथिक जगत में सबसे पहला व अग्रणी इलेक्ट्रो होम्यापैथिक संगठनों में गिना जाता है, बताते चलें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया वही संगठन है जिसे भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान हविभाग द्वारा दिनांक 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा, चिकित्सा एवं अनुसंधान हेतु आदेश जारी किया गया है जिसके द्वारा देश की समस्त राज्य सरकारों तथा केन्द्र शासित प्रशासनों को अपने–अपने राज्यों/क्षेत्रों में लागू करने हेतु निर्देशित किया गया है।

वर्तमान में इस संगठन की भूमिका स्वतंत्र नियामक की है, यह एक ऐसा आदेश है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये वरदान साबित हो रहा है, अनुसंधान शब्द तो छोटा है परन्तु इसकी परिधि/फील्ड देखी जाये तो अनन्त है जीवन गुज़र जायेगा परन्तु अनुसंधान/शोधकार्य कभी समाप्त नहीं होंगे, *अनुसंधान वह क्षेत्र है जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को और अधिक जनोपयोगी बनाया जा सकता है इसलिए आईये हमसब मिलकर सकारात्मक विचारों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।*

हमारे अनेक चिकित्सक आज शोध कार्य में लगे हैं, आशा है कि एक न एक दिन उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी, हम बात प्रगति मैदान में इलेक्ट्रो होम्यापैथी के स्टाल की कर रहे हैं, यह स्टाल जहाँ पर अन्य कम्पनियों द्वारा अपने–अपने स्टालों को बेहतर ढंग से दिखाने के लिए तरह–तरह के उपक्रम किये गये थे, स्टालों को करीने से सजाया गया था, स्टाल में सुन्दर और आकषर्ण छरहरी काया वाली बालायें बैठायी गयी थीं जिन्हें देखकर लोग आकर्षित हों और कुछ क्षण उस स्टाल को भी दे दें वहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथीक के स्टाल में सिर्फ एक बड़ा सा बैनर लगा था जिस पर भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी केन्द्रों को इंगित किया गया था तथा पीछे बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था **Yes We Have Answer To Cancer** यह शब्द लोगों को इतना प्रभावित कर रहे थे कि पूरे परिसर में लगे हुए सारे स्टालों की तुलना में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस स्टाल में सर्वाधिक भीड़ नज़र आती थी और हर आने वाला यही सवाल करता था कि आप इतने विश्वास के साथ कैंसर के बारे में यह कैसे दावा कर रहे हैं ? सबसे अच्छी बात तो यह थी कि स्टाल को संचालित करने की जिम्मेदारी जिस प्रतिनिधि के पास होती थी वह बड़ी ही सहजता से इसका उत्तर दे देता था सामान्य जन से लेकर चिकित्सा विज्ञान से जुड़े व्यक्ति एक जिज्ञासु की भांति कैंसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विचार जानना चाहता था, नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, नई दिल्ली के कुछ छात्र व होम्योपैथी में रिसर्च कर रहे चिकित्सक निरन्तर यह जिज्ञासा व्यक्त करते थे कि क्या इस तरह से भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कैंसर का इलाज किया जा सकता है ! जब सन् 1990 में इतने दमदार दावे के साथ कैंसर पर अपने विचार दिये जा सकते थे तो आज 33 वर्षों के बाद जब कि हम सब बहुत परिपक्व हो चुके हैं, **EHMAI** के प्रयासों का ही परिणाम है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अनेक राज्यों ने अपनी सहमति दी है, जिसके कारण बड़ी संख्या में सामान्य चिकित्सालयों के साथ–साथ कैन्सर केन्द्र व कैन्सर अनुसंधान केन्द्र स्थापित/ संचालित किये जा रहे हैं जिससे आमजन को सस्ते दामों में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो रहा है, और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के काफी जानकार भी हो चुके हैं तो क्यों न हम सब मिलकर इस गम्भीर बीमारी पर अपनी एक राय बनायें और रोगियों को रोग मुक्त करें यह बात सत्य है कि कैंसर का समूल नाश प्रथम व द्वितीय अवस्था के कैंसर में ही होता है यदि तीसरी अवस्था आ जाती है तो दर्द से लाभ तो दिला ही देते हैं, अभी कुछ वर्षों पूर्व की बात है कि पटना के एक चिकित्सक ने बिहार राज्य के तत्कालीन स्वास्थ मंत्री (वर्तमान में केन्द्रीय मंत्री) के एक रिश्तेदार जो कैंसर से ग्रसित थे जीवन व मृत्यु से लड़ रहे थे असहनीय वेदना से जो चीत्कार निकलती थी उससे अगल–बगल के लोग भी दुखी हो जाते थे सब उनकी मृत्यु की कामना करते थे परन्तु मृत्यु आती नहीं थी, स्वास्थ्य मंत्री का रिश्तेदार होने के कारण प्रदेश और प्रदेश के बाहर अच्छे से अच्छे कैंसर विशेषज्ञों ने उनका इलाज भी किया परन्तु लाभ नहीं मिला एक चिकित्सक ने तो यह कह दिया कि घर ले जाइये भगवान पर भरोसा करिये, तभी किसी ने मंत्री जी को इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नाम सुझा दिया ! मंत्री जी के निर्देश पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक की खोज शुरू हुई और जो चिकित्सक मिला उसने कहा कि इलाज तो मैं करूंगा परन्तु यह स्पष्ट कर दूँ कि रोगी ठीक नहीं होगा परन्तु दर्द से मुक्ति मिल जायेगी, हुआ भी यही जैसाकि चिकित्सक ने कहा था उसने अपना दावा पूरा किया, मंत्री जी गदगद हो गये चिकित्सक के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भी शुभ चिन्तक हो गये, मंत्री जी जहां कहीं भी जाते इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चर्चा अवश्य करते।

यहां पर यह उदाहरण लिखने का तात्पर्य यह है कि हमारी औषधियों में इतनी ताकत है कि निसंदेह कैंसर जैसे असाध्य रोग पर नियन्त्रण पाया जा सकता है, अब हमें वही रास्ते ढुढने होंगे जिसपर चल कर हम सब एक नये सुप्रभात का इंतजार करें, कभी भी सम्भावनायें समाप्त नहीं होती हैं कब क्या हो जाये, यह हम सब नहीं जान सकते लेकिन इसी विचार में पड़े रहकर कार्य न करें यह भी उचित नहीं है, हमें जो अधिकार और जो अवसर प्राप्त हैं हमें उनका भरपूर उपयोग करना चाहिये और कार्य करते हुए लक्ष्य की प्राप्ति करनी होगी, प्रतीक्षा का समय अब ज्यादा नहीं है जो वर्तमान दृश्य दिखायी दे रहा है वह अच्छाई की ओर संकेत दे रहा है इसलिए अनिर्णय की स्थति से उबरकर सकारात्मक निर्णय लें और पूरे उत्साह के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में लग जाये इलेक्ट्रो होम्योपैथी सबकी है इसपर किसी का विशेषाधिकार नहीं है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी असीमित है इसको सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है।

देवी अहिल्या बाई हॉस्पिटल इन्दौर द्वारा सिन्हा जयन्ती मनाने का क्रम जारी

इन्दौर (मध्य प्रदेश) इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मसीह–उल–हिन्द डा0 नन्द लाल सिन्हा का जन्म दिवस राष्ट्रीय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक दिवस के रुप में वर्ष 2021 से देवी अहिल्या बाई कैन्सर हॉस्पिटल इन्दौर द्वारा समारोह आयोजित किया जा रहा है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वास्तविक सम्मान दिलाना .... प्रथम पेज से आगे

आंकड़े दें कि आपने किन–किन रोगों का इलाज किया है ?तब आप निर्भीक होकर वास्तविक डेटा उपलब्ध करा सकते हैं।

वास्तविकता यह है कि जितने भी रोग हैं उनपर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का जबरदस्त प्रभाव है, आंकड़ो एवं साक्ष्यों का समय से सुरक्षित नहीं होने के कारण उन्हें हम प्रमाण स्वरुप आधार बना कर प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं हालांकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति सामान्य से लेकर असाध्य एवं गम्भीर रोगों पर भी प्रभावी है।

किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता है कि उस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाने वाले लोगों की संख्या अधिकाधिक हो, आज युग बदल चुका है, हर क्षेत्र में जबरदस्त परिवर्तन हो चुका है, चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं ऐसे में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समान रूप से स्थापित करना है तो समाज में बहुत कार्य करना होगा, हमारे पास जो लाखों की संख्या है उन्हें अपने दायित्वों को समझना होगा और दायित्वों का पालन करते हुये एक नई कार्य पद्धति को जन्म देना होगा, यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की बात करें तो इससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं कि चिकित्सा पद्धति का विकास नहीं हुआ है, लेकिन जो संतुलित और समन्वित वास्तविक विकास होना चाहिये वह नहीं हो पाया है।

यदि हम इसके कारणों पर जायें तो अनेकों कारण दृष्टिगोचर होंगे, यह कटु सत्य है कि 2003 में जो भारत सरकार द्वारा गाईड लाइन जारी की गयी वह 2010 तक का काल खण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये बहुत कठिन रहा है, परन्तु जिस सूझ–बूझ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालकों ने इस चिकित्सा पद्धति को कार्य करने का एक अवसर दिलाया है तो हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम इस प्राप्त अवसर का भरपूर लाभ उठायें, हमारे जो चिकित्सक अपने चिकित्सा व्यवसाय में केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की औषधियां व्यवहार में ला रहे हैं उन्हें सफलता प्राप्त हो रही है एवं परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं, इन प्राप्त परिणामों से चिकित्सकों में उत्साह का भाव जागृत हुआ है।

पहले की तुलना में अब औषधियों की कमी नहीं है लगभग हर शहर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियां उपलब्ध हैं, हमारे कुछ औषधि निर्माताओं ने मूल औषधियों के साथ–साथ अनेक स्वरुप में औषधियां उपलब्ध करा रहे हैं जिनके परिणाम भी अच्छे प्राप्त हो रहे हैं मगर इस प्रकार के कार्य करने वाले चिकित्सकों की संख्या का प्रतिशत हमें बढ़ाना है, जब चिकित्सा पद्धति का प्रभाव सामान्य जन स्वंय अनुभव करेगा तो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का व्यापक स्तर पर स्वयं विस्तार हो जायेगा, लोगों को चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रही नवीन जानकारियों से वे अपडेट रहें ताकि चिकित्सकों एवं छात्रों को बिलकुल नवीन शोधों एवं जानकारियों से अवगत करा सकें इससे एक लाभ यह होगा कि विकास की गति ज़्यादा तेज़ी से बढ़ेगी, जो चिकित्सक अभी भी अन्य विधा प्रयोग में लाते हैं उनके अन्दर भी एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है और यह चिकित्सक भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा करने का मन बना चुके हैं, हमारे पास किसी भी प्रकार का कोई सरकारी अनुदान नहीं आता है इसके उपरान्त भी हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ निजी संसाधनों के बल पर शोध कार्य में लगे हुये हैं, शोधार्थियों को परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं।

यदि सरकार का थोड़ा सहयोग और समर्थन मिल जाये तो हमारे शोधार्थी किसी से कम उपयोगी नहीं रहेंगे।

इस सम्बन्ध में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक पद्धति विकास एवं अनुसंधान संस्थान ने भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (I.C.M.R.) को अनुरोध पत्र भी प्रेषित किया है, सरकार के सहयोग और समर्थन के लिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया भी निरन्तर प्रयासशील है, भारत सरकार एवं राज्य सरकारों से इस विषय पर पत्र व्यवहार जारी है, जहाँ कहीं भी भौतिक सम्पर्क की आवश्यकता है वह भी किया जा रहा है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को जन–जन तक पहुँचाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये क्योंकि यदि अधिकार पूर्वक कार्य करना है तो राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करते हुये जनपद स्तरीय पंजीकरण को अनिवार्य रुप से कराना चाहिये ताकि हमारी वास्तविक गणना हो सके।

अन्य संस्थानों ने भी धूम–धाम से मनाया डा0 नन्द लाल सिन्हा का 153वाँ जन्मोत्सव

फतेहपुर– बाबा–ए–इलेक्ट्रो होम्योपैथिक,मसीह–उल–हिन्द डा0 नन्द लाल सिन्हा जी का 135वाँ जन्मोत्सव जनपद फतेहपुर में जनपदीय कार्यालय में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, बोर्ड द्वारा संचालित जनपदीय कार्यालय एवं काउंट मैटी मेमोरियल क्लीनिक, खम्भापुर, फतेहपुर में जिला प्रभारी अधिकारी भी डा0 वकील अहमद एवं पूर्व सुबेदार मेजर उ0प्र0 पुलिस हाजी अनीस उल्ला ने डा0 काउंट सीज़र मैटी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, डा0 सिन्हा के जन्मोत्सव के अवसर पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रभारी अधिकारी ने बताया कि आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी पहचान की मोहताज नहीं है, उ0प्र0 शासन चिकित्सा अनुभाग–6 के अन्तर्गत इलेक्ट्रो होम्योपैथ चिकित्सक, इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा सेवा कार्य पूर्ण सम्मान जनक रुप से कर सकते हैं, प्रभारी अधिकारी ने कहा कि बोर्ड से रजिस्ट्रेशन एवं जिला पंजीयन कराये बिना चिकित्सा सेवा कार्य करने कि अनुमति नहीं है, कैम्प क्लीनिक कमेटी के सदस्य भी डा0 देवानन्द सागर ने अपने वकतव्य में कहा कि इटली से भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को लाने का श्रेय डा0 सिन्हा को ही जाता है, गोष्ठी के अंत में सभी का आभार प्रकट करते मिष्ठान वितरण हुआ।

रायबरेली– अच्छी प्रेरणाएं मनुष्य को सदैव से प्रगति के मार्ग पर ले जाती है और यही प्रगति किसी को भी स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में डा0 नन्द लाल सिन्हा एक प्रेरक व्यक्तित्व की तरह आज भी हम सभी का मार्ग दर्शन कर रहे है। यह विचार डा0 नन्द लाल सिन्हा की 135वीं जयन्ती पर आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल इस्टीट्यूट छजलापुर रायबरेली के प्राचार्य डा0 पी0एन0 कुशवाहा द्वारा डा0 सिन्हा जयन्ती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विचार व्यक्त किये। उक्त क्रम में उप प्राचार्य डा0 आर0के0 द्विवेदी ने कहा इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जितना अध्ययन इन्होंने किया था उतना अध्ययन आज के छात्र नहीं कर रहे है। इसमें सन्देह नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास नहीं हुआ है बल्कि सर्वांगीण विकास हो रहा है। जो सपना डा0 सिन्हा ने 1963 में देखा था वह सपना आज पूरा हो रहा है। डा0 सिन्हा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए वरदान से कम नहीं थे उनके कार्य हमें प्रेरित करते है। उक्त अवसर पर रमेश कुमार, सुनील कुमार, रिंकू साहू, राजेन्द्र सिंह, रामपाल, सौरभ कुशवाहा, पवन कुमार, शुभम, आकाश, प्रिंस आदि चिकित्सक उपस्थित थे।

खुर्जा– जनपद प्रभारी इलेक्ट्रो होम्योपैथी खुर्जा, जनपद बुलन्दशहर पर डा0 नन्द लाल सिन्हा के जन्मोत्सव समारोह पर उपस्थित जनपद गौतम बुद्ध नगर प्रभारी डा0 आर0 के0 तेवतिया एवं गाजियाबाद जनपद प्रभारी डा0 एस0 के0 शर्मा जनपद मेरठ प्रभारी डा0 अरूण त्यागी जनपद हापुड़ एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथी पदाधिकारी सदस्यगण एवं गणमान्य व्यक्तियों ने इस समारोह में भाग लेकर डा0 नन्द लाल सिन्हा की प्रतिमा पर फूलमाला अर्पित की। डा0 पी0के0 राघव ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डा0 नन्द लाल सिन्हा का 135वां प्रेरणा दिवस जन्मोत्सव समारोह मना रहे है डा0 नन्द लाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर 1889 में हुआ आपने अपना पूरा जीवन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के उत्थान के लिए लगा दिया और अंत तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा कार्य करते हुए 30 अगस्त 1979 में इस माया रूपी संसार को त्याग दिया। डा0 आर0 के0 तेवतिया ने बताया कि डा0 एम0एम0 इदरीसी जी चेयरमैन बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 लखनऊ ने डा0 नन्द लाल सिन्हा को मसीह–उल–हिन्द के नाम से अलंकृत किया। क्रम से डा0 आर0 के0 चौधरी, डा0 सुमित शर्मा, डा0 अरूण त्यागी, डा0 अमित राघव आदि ने अपने–अपने विचार रखे।

हमीरपुर– बुंदेलखण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथिक स्टडी सेंटर पटकाना में जिला प्रभारी डा0 गणेश सिंह ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जनक डा0 काउंट सीजर मैटी के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया वरिष्ठ चिकित्सक डा0 सिंह ने कहा कि इस चिकित्सा पद्धति को इटली से हिन्दुस्तान में लाने का श्रेय डा0 नन्द लाल सिन्हा को ही जाता है और आज यह चिकित्सा पद्धति न केवल लाखों लोगों के रोजगार का सम्मानजनक आधार बन गई है बल्कि करोड़ो लोगो के लिए हानिरहित और सुलभ चिकित्सा पद्धति बन गई। उन्होंने सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथ से यह अपील की है कि शासन की मंशा के अनुसार ही चिकित्सा सेवा कार्य करें। इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों ने डा0 नन्द लाल सिन्हा के पद चिन्हों पर चलने का संकल्प दोहराया। आज इलेक्ट्रो होम्योपैथिक इस मुकाम पर पहुंची है कि आज लोगों का इलेक्ट्र होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर ही विश्वास कायम हो रहा है जिससे जन मानस असाध्य से असाध्य रोगों पर निजात मिल रही है।इलेक्ट्रो होम्योपैथिक धर्मार्थ चिकित्सालय की चिकित्सका डा0 मानसी, मीडिया प्रभारी डा0 मेहर मयुर निगम, मुनीश गुप्ता, डा0 देवानंद, डा0 स्वाती खरे, डा0 कंचन गुप्ता, डा0 अरशद अंसारी, डा0 सुनीता सागर आदि लोग उपस्थित थे। अयोध्या में डा0 तुफैल द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजन की सूचनायें समय से प्राप्त न होने के कारण प्रकाशित नहीं हुयी हैं।

ڈاکٹر نند لال سنہا کے یوم
پیدائش پر مفت الیکٹرو ہومیو
پیتھک میڈیکل کیمپ

[illegible]

BEHM, UP के वित्त नियंत्रक ज़फर इदरीसी को मंत्री दानिश अंसारी ने किया सम्मानित

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के वित्त नियंत्रक श्री मो0 ज़फर इदरीसी माननीय अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री उ0प्र0 श्री दानिश अंसारी से सम्मान–पत्र लेते हुये — छाया गजट

इलेक्ट्रो होम्योपैथी वाले भी सुधर जायें — जगदाले

महाराष्ट्रा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के President EH Dr. सतीश जगदाले ने निदेशक होम्योपैथी, उ0प्र0 लखनऊ के पत्र संख्या नि0हो0/25/84/7513 दिनांक 26 नवम्बर, 2019 का पत्र जो आजकल तेज़ी से सोशल मीडिया पर वायरल है पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुये कहा कि इसलिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी वाले भी सुधर जायें कोर्ट एवं शासन की ओर से already बैचलर B.E.M.S. कोर्स छोड़के केवल सर्टिफिकेट कोर्स का ही एजुकेशन चलायें।

वर्ष 2023 ने जाते–जाते इलेक्ट्रो होम्योपैथिक प्रेमियों को एक और झटका दिया

अक्षय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट, लखनऊ के प्रबन्धक/प्राचार्य डा0 आर0 के0 कपूर ने 23 नवम्बर, 2023 को सांय 7–30 बजे हम सबको छोड़कर ब्रह्मलीन हो गये, प्रकृति का नियम है जो भी पृथ्वी लोक में जितने समय के लिये आया है समय पूर्ण होने पर उसे ब्रह्मलोक में पुनः वापस जाना है, आनन्द बक्शी ने फिल्म अन्धा कानून में एक मार्मिक गीत लिखा था रोते रोते हंसना सीखो, हंसते हंसते रोना..... जितनी चाबी भरी राम ने उतना चले खिलौना .... वाकई सही लिखा गया है वास्तव में आदमी एक खिलौना ही तो है, प्रभु द्वारा जितनी चाभी भर दी गयी उतना ही उसे चलना होगा।

एक लोकोक्ति है कि " पूत के पाँव पालने में दिख जाते हैं " बिलकुल सटीक बैठती है डा0 आर0 के0 कपूर को अपने जीवन काल में अनेक संघर्ष करने पड़े, जो जीवन में संघर्ष करता है वही विजय पताका लहराता है, कपूर जी ने अपने जीवन में शिक्षा से कोई समझौता नहीं किया उन्होंने स्वंय अपनी योग्यता को चार–चाँद लगाते हुये एलएलबी किया सच्चाई एवं ईमानदारी के चलते वकालत करने में रुचि नहीं दिखाई, मन में अशान्ति एवं विचलन के कारण अभी भी कुछ नया करने का विचार होने लगा तब इन्होंने अपना ध्यान चिकित्सा की ओर किया होम्योपैथी को अच्छी चिकित्सा पद्धति मानकर आपने होम्योपैथी में बी0एच0एम0एस0 की परीक्षा उत्तीर्ण कर चिकित्सा व्यवसाय करने हेतु होम्योपैथिक बोर्ड से पंजीयन भी करा लिया, चूँकि उत्तर प्रदेश में 70 के दशक में आम जनता होम्योपैथी में कम रुचि रखती थी और रोगी एलोपैथी को प्राथमिकता देता था तो होम्योपैथिक चिकित्सकों के पास रोगियों की संख्या भी कम हुआ करती थी 90 प्रतिशत होम्योपैथ इस व्यवसाय को अंशकालिक रुप में किया करते थे तो डा0 कपूर ने भी इसका अनुसरण किया और उन्होंने भारतीय स्टेट बैंक में नौकरी भी की ऊहापोह की स्थिति अभी भी पीछा नहीं छोड़ रही थी एक समय था कि स्टेट बैंक के मैनेजर की माता को गठिया की शिकायत थी अनेक चिकित्सकों से जब लाभ नहीं मिला तो मैनेजर साहब ने स्टाफ से चर्चा करते हुये कोई बढ़िया चिकित्सक के बारे में पूछा डा0 कपूर कहां पीछे हटने वाले थे उन्होंने सोचा कि यदि हमने मैनेजर साहब की माता को ठीक कर दिया तो स्टाफ में वाह–वाही तो होनी ही साथ में रुतबा भी बढ़ेगा, कपूर साहब ने बड़े ही जोरों से चैलेन्ज कबूल करते हुये कहां एक बार हमसे भी इलाज करवा लीजिये शायद लाभ मिले, पहले तो मैनेजर साहब सकपकाये फिर उन्होंने झिझका कर कपूर साहब को इलाज करने की स्वीकृति प्रदान कर दी इसे ईश्वर का चमत्कार समझें या डा0

कपूर का भाग्य मैनेजर साहब की माता जी ठीक हो गयीं।

अब राज कुमार कपूर को बैंक वाले डा0 कपूर कहने लगे एक दिन डा0 कपूर ने मैनेजर साहब से चर्चा करते स्टेट बैंक की कैन्टीन में इम्प्लाइज यूनियन की ओर से एक होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी खोलने की अनुमति प्राप्त कर ली और स्वयं ही उस डिस्पेन्सरी के चिकित्साधिकारी हो गये।

चंचल मन शान्त नहीं था अभी भी कुछ नया करने की ललक जाग रही थी चिकित्सा के साथ–साथ चिकित्सा शिक्षा की ओर मन बार–बार चला जाता सन् 1982 में बैंक के कार्य से उन्हें बाराबंकी जाना पड़ा वहां पर नेहरु इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल कालेज का बोर्ड देखा जो बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 से सम्बद्ध था, बैंक का काम निपटाकर डा0 कपूर नेहरु इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल कालेज पहुंचे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी व बोर्ड के बारे में जानकारी ली अब डा0 कपूर के मन में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल कालेज खोलने का मन बना लिया, उन्होंने बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 के पंजीकृत कार्यालय कानपुर में स्वयं आकर तत्कालीन रजिस्ट्रार डा0 वहीदुल हसन सिद्दीकी से सम्पर्क कर मान्यता की सारी जानकारी जुटाई वर्ष 1982 में अक्षय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल कालेज,लखनऊ (अब अक्षय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट लखनऊ) नाम से सम्बद्धता ग्रहण कर विधिवत कालेज का संचालन करने लगे। नौकरी करते हुए पूर्ण समय कालेज को नहीं दे पा रहे थे अतः इन्होंने बैंक से वी0आर0एस0 ले लिया अब अपना पूर्ण समय कालेज को देने लगे अब इनका मन शान्त था परन्तु जिज्ञासा शान्त नहीं थी तो उन्होंने एक जन भारतीय नाम से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का दूसरा कालेज खोल दिया अपरिहार्य कारणों से जन भारतीय कालेज नहीं चल सका। डा0 कपूर के दो पुत्र एवं एक पुत्री है इसी बीच इनका स्वास्थ्य भी खराब रहने के कारण ज्येष्ठ पुत्र डा0 आशुतोष कपूर ने अक्षय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट का कार्यभार देख रहे है लम्बी बीमारी के कारण डा0 कपूर हम सबके बीच चले गये।

अब इनके पुत्र डा0 आशुतोष कपूर जी का दायित्व बनता है कि वह अपने पिता के पग चिन्हों पर चलकर अपने पिता के सपनों को साकार करें।

Board of Electro Homoeopathic Medicine, U.P.'s Associate External & Research Scholar of CSJM University, Kanpur Smt. Samreen Visited to Asia's Largest Pharmaceutical & Research Development Centre, Hyderabad

1

2

3

Pic-1
Smt. Samreen Research Scholar of C.S.J.M. University, Kanpur going to visit MSN Hyd. with her Husband Dr. Mohd. Imran Neurologist K.G.M.U. Lucknow and their Son Samar Imran

Pic-2
Smt. Samreen Research Scholar of C.S.J.M. University Kanpur in MSN Lab

Pic-3
Smt. Samreen Research Scholar C.S.J.M. University, Kanpur addressing in a lecture Hall

बी०ई०एच०एम० के लिए डा० अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 ए रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–14से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–14 से प्रकाशित किया गया।